इकाई 12 उपभोग और उत्पादन के प्रारूप*

इकाई की रूपरेखा

12.0 उद्देश्य

12.1 प्रस्तावना

12.2 'उद्यमशील' क्रान्ति

12.3 यूरोपीय विवाह प्रारूप की भूमिका

12.4 उद्यमशीलता का मूल्यांकन

12.5 प्रारम्भिक आधुनिक यूरोप में आद्य-औद्योगीकरण

12.6 आद्य-औद्योगीकरण के सिद्धान्तों की आलोचना

12.7 प्रारम्भिक आधुनिक यूरोप में पुस्तक उत्पादन, साक्षरता और मानव पूँजी निर्माण

12.8 सारांश

12.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

12.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप प्रारम्भिक यूरोप में उपभोग और उत्पादन के निम्नलिखित पहलुओं को समझेंगेः

- 'उद्यमशील' क्रांति की अवधारणा और इसका आलोचनात्मक मूल्यांकन,
- यूरोपीय विवाह प्रारूप की भूमिका और अर्थव्यवस्था की प्रकृति पर इसका प्रभाव,
- आद्य-औद्योगीकरण की अवधारणा और उसका मूल्यांकन, तथा
- साक्षरता, पुस्तक-उत्पादन और मानव पूँजी निर्माण की प्रकृति।

12.1 प्रस्तावना

पारम्परिक इतिहास में, औद्योगिक क्रान्ति को सबसे महत्वपूर्ण घटना माना गया। हालांकि, हाल के शोधों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि यह 'क्रान्ति' आर्थिक विकास की गति में आकस्मिक वृद्धि नहीं थी, बल्कि एक क्रमिक विकास की ओर बढ़ना था, जिसे वास्तव में एक स्पष्ट क्रान्ति के रूप में नहीं देखा जा सकता है। आद्य-उद्योग जिसमें ग्रामीण, छोटे पैमाने के उद्योगों ने श्रम शक्ति के माध्यम से कृषि गतिविधियों और औद्योगिक क्रियाकलापों को विश्व बाजार से जोड़ दिया। इसे औद्योगिक और जनसांख्यिकीय विकास के एक इंजन के रूप में देखा गया था, जो औद्योगिक परिवर्तन से पहले की घटना थी। यूरोप में विशेष रूप से पश्चिम भाग में उत्तरी सागर की सीमा के क्षेत्र में प्रारम्भिक आधुनिक काल-अवधि गतिहीन काल-अवधि नहीं थी, बल्कि यह एक गतिशील अवस्था थी जिसके कारण शहरीकरण में उल्लेखनीय वृद्धि हुई, लम्बी दूरी के व्यापार और वित्त में तेजी से विकास हुआ और कृषि क्षेत्र के उत्पादन और उत्पादकता में वृद्धि हुई। इसी तरह, प्रारम्भिक यूरोपीय लोग कैसे

* इकाई लेखक : प्रो. श्रीकृष्ण

उपभोग करते थे, वे क्यों कुछ विशिष्ट वस्तुओं का उपभोग करते थे और इस उपभोग ने समाज को कैसे प्रभावित किया, इस बारे में हमारी समझ भी बदल गई है। पहले के मार्क्सवादी विद्वान स्वाभाविक रूप से उपभोग से अधिक उत्पादन की प्रधानता के पक्षधर थे। यह माना जाता था कि उपभोग में परिवर्तन उत्पादन, वाणिज्य और प्रौद्योगिकी के परिवर्तनों के अनुसार संचालित होते हैं। अब अनेक विद्वानों को लगता है कि उपभोग और इसके प्रारूप प्रारम्भिक आधुनिक निम्नतटीय देशों में सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों के लिए महत्वपूर्ण थे। सबसे महत्वपूर्ण तर्क यह है कि प्रारम्भिक आधुनिक निम्नतटीय क्षेत्रों जैसे हालैंड, बेल्जियम आदि देशों में एक 'उपभोक्ता समाज' की शुरुआत ने 'उद्यमशीलता' के विकास को सुविधाजनक बनाया जिससे पूरे पश्चिमी यूरोप में औद्योगिक विकास को बढ़ावा मिला।

12.2 'उद्यमशील' क्रान्ति

जान दी व्रिज ने औद्योगिक क्रांति से पहले आने वाली एक 'उद्यमशील क्रांति' की अभिधारणा पेश की। यह नजरिया प्रारम्भिक आधुनिक यूरोपीय आर्थिक इतिहास की फिर से जाँच के लिए सबसे महत्वपूर्ण नजरियों में से एक बन गया है। 1975 में दी गई व्रिज की परिकल्पना हालैंड के प्रारम्भिक आधुनिक किसानों के उपभोग प्रारूपों पर आधारित थी। उन्होंने तर्क दिया कि इन किसानों में अधिक वस्तुओं की माँग करने की क्षमता थी और उनकी बढ़ती क्रय शक्ति ने उनके लिए अधिकाधिक घरेलू वस्तुओं का उपभोग करना सम्भव बना दिया था। उन्होंने इसका प्रमाण सत्रहवीं और अठाहरवीं शताब्दी में पाया। उन्होंने देखा कि किसानों के घरों में खिड़कियों के पर्दे और अग्नि कोष्ठ के लिए कपड़े के पर्दों का धीरे-धीरे इस्तेमाल होने लगा था। उन्होंने विभिन्न प्रकार की मेज-कुर्सियों, नये तरह के गिलास, टिन और मिट्टी के बर्तनों का उपयोग करना शुरू कर दिया। किसान अब अधिक बार कुर्सियों और रसोई के बर्तनों का इस्तेमाल करते थे और किसानों के घरों में दर्पण, घड़ियों और पुस्तकों का उपयोग आम हो गया। यद्यपि व्यक्तिगत किसान की दृष्टि से इन परिवर्तनों में कुछ भी क्रांतिकारी नहीं था, लेकिन जब हम उन्हें एक साथ लेते हैं तो यह उनके द्वारा शहरी लोगों के उपभोग व्यवहार या उनके सांस्कृतिक व्यवहारों को अपनाने या नकल करने की एक धीमी और स्थिर प्रक्रिया को प्रदर्शित करता है। इन सभी का अंतिम परिणाम डच ग्रामीण इलाकों में उपभोग की एक अलग शैली था। अपने बाद के लेखन में, दी व्रिज ने फिर जोर दिया कि किसानों के बढ़ते उपभोग के स्तर के कारण घरेलू अर्थव्यवस्था की प्रकृति भी बदल गई और इससे आद्य-उद्योगों के विकास को मदद मिली। बाजार में उपभोक्ता वस्तुओं की अधिक आपूर्ति के कारण, परिवारों को अपनी आर्थिक रणनीतियों के बारे में पुनर्विचार करना पड़ा कि बाजार की मौजूदा परिस्थितियों के अनुसार अपने संसाधनों और श्रम को किस प्रकार आवंटित किया जाए। किसान परिवार अब बाजार के लिए अधिक से अधिक उत्पादन करने लगे। वे अपने स्वयं के उपभोग की जरूरतों के लिए बाजार पर अधिक निर्भर हो गए। इस सबके परिणामस्वरूप पहले से अधिक विशिष्टीकरण और श्रम का विभाजन हुआ। इसका अंतिम परिणाम संसाधनों का अधिक उत्पादक उपयोग था और उच्च उत्पादन का मतलब उपलब्ध वस्तुओं का निम्न सापेक्ष मूल्य भी था। इस प्रकार, दी व्रिज के विचार में, यह विशेष रूप से उपभोक्ता इच्छाओं और माँगों में बदलाव था– अर्थात् 'सुखकारिता, आनंद, नवीनता और पहचान (अस्मिता) की तलाश', जो उनकी 'उद्यमशील क्रांति' के 'सक्रिय खोजी उपभोक्ता' को परिभाषित करता है। यह एक

प्रबल परिवर्तन था जो औद्योगिक क्रांति के शुरू होने से पहले हुआ था और जिसने बाद में कारखाने की तर्ज पर बड़े पैमाने पर उत्पादन को जन्म दिया। औद्योगिक क्रांति की दिशा में इन धीमे और लगातार परिवर्तनों से कुछ आर्थिक प्रवृत्तियों जैसे उपभोक्ता माँग में वृद्धि से मदद मिली। यह उपभोक्तावाद की वृद्धि में प्रकट हुआ, जिसमें अधिक से अधिक नई वस्तुओं की मांग शामिल थी और दी ब्रिज के अनुसार, यह सत्रहवीं शताब्दी में, हालैंड और इग्लैंड में, 'उद्यमशीलता' के कारण हुआ था। सत्रहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के दौरान टिकाऊ और सामान्य से अलग वस्तुओं के प्रसार ने नई जरूरतों और मांगों का मार्ग प्रशस्त किया, जिसे किसान परिवार केवल अपनी आय का स्तर बढ़ा कर हासिल कर सकते थे। एक किसान परिवार के लिए इसका मतलब तीन चीजें थीं: 1. कि वह लगातार कठोर श्रम करे और इस प्रक्रिया को श्रमगहनता के रूप में स्वीकार किया गया है। 2. कि वे लम्बे समय तक काम करें (श्रम का दीर्घीकरण)। 3. कि वे बाजार में श्रम को अधिक बार बेचें और/या खरीदें, जिससे श्रम बाजारों में उनकी भागीदारी बढ़ जाती है (श्रम प्रवर्धन)।

12.3 यूरोपीय विवाह प्रारूप की भूमिका

यह तर्क दिया गया है कि महिलाओं ने 'उद्यमशील क्रान्ति' में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बाजार की वस्तुओं की बढ़ती माँग ने परिवारों और विशेष रूप से महिलाओं को अवकाश और घरेलू उत्पादन से आय-अर्जन के काम के लिए फिर से समय आबंटित करने के लिए प्रेरित किया। कुछ विद्वानों ने तर्क दिया है कि यूरोप में देर से मध्ययुग के अंतिम चरण और प्रारम्भिक आधुनिक काल में एक नया विवाह का प्रारूप उभरा जिसने इसे सुविधाजनक बनाया। यूरोपीय विवाह प्रारूप में महिलाओं को अपना जीवन साथी चुनने में अधिक चयन का अधिकार था और यह पूरी तरह विवाह के लिए एक लड़के और लड़की की सहमति पर आधारित था। बच्चों की स्थिति भी विशेष रूप से जब वे परिवार की आय में योगदान करना शुरू करते हैं, अपेक्षाकृत मजबूत होती है। विवाह के इस प्रारूप की एक और विशेषता यह भी थी कि देर से विवाह आम हो गया क्योंकि एक कन्या को स्वयं अपना पति चुनना पड़ता था और नियमित आय के साथ अपना परिवार स्थापित करना पड़ता था। कुछ लड़कियों के अविवाहित रहने की संभावना थी। यूरोपीय विवाह प्रारूप, रोजगार पाने और ब्लैक डेथ के बाद की शताब्दी में अपेक्षाकृत उच्च मजदूरी की दरों की अवधि में विवाह या अधिक सामान्यतः मानव प्रजनन व्यवहार का एक नया संस्थागत अनुकूलन था। संक्षेप में, इन परिस्थितियों में जब मजदूरी से आय अधिक थी, तब विवाह के प्रारूप भी बदलने लगे। सहमति वाले जीवन साथियों के सम्बंध बदल गए और यह बाजार की शक्तियों से प्रभावित हुआ खासकर क्योंकि श्रम बाजारों के विकास का महत्व बढ़ गया था। मजदूरी का आय घटक घरेलू आय के लिए महत्वपूर्ण हो जाता है। न केवल श्रम बाजारों का विस्तार हो रहा था, बल्कि मजदूरी उपार्जक इन परिवारों को पूँजी बाजार में प्रवेश करने और बाजार से सुलभ उपभोक्ता वस्तुओं को खरीदने का भी अधिकार था। साथ ही, उन्होंने अपने जीवन की उत्तरजीविता बढ़ाने के लिए और अपने जीवन को नई परिस्थितियों के अनुकूल बनाने और अपने बच्चों के लिए चौतरफा बाजारों के उभरने के द्वारा उपलब्ध सुअवसरों का उपयोग करने के लिए नई कार्य-प्रणालियों को विकसित किया। पहले के मुकाबले, जब किसी को भी स्कूली शिक्षा और प्रशिक्षण की परवाह नहीं थी, अब मामूली साधनों वाले परिवारों ने भी अपने बच्चों की औपचारिक शिक्षा में अधिक निवेश करना शुरू कर दिया। उन्होंने प्रशिक्षुओं के रूप में था अन्य

लोगों के घरों में नौकरों के रूप में प्रशिक्षण सुविधाओं का उपयोग किया। लोग 'सामाजिक पूँजी' प्राप्त करने के लिए अधिक निवेश क्यों करते हैं? नई विवाह प्रणाली में, विस्तारित बड़े परिवारों के पारम्परिक सम्बंध टूटने शुरू हो गए और लोगों को वृद्धावस्था या एकल पितृत्व/मातृत्व से उत्पन्न समस्याओं का हल करने के लिए अनुकूलन करना पड़ा। इसलिए शिक्षा और प्रशिक्षण में इस तरह के निवेश से उन्हें अधिक कमाने के अवसरों को बेहतर बनाने में मदद मिली होगी। यह सामाजिक पुनर्गठन और समाज को फिर से नए प्रतिमान में ढालने का काम मध्यकाल के अंत में, इंग्लैंड और विशेषकर निम्न तटीय देशों में चल रहा था।

उत्तरी सागर क्षेत्र में, ब्लैक डेथ के बाद, मजदूरी की दरें अपेक्षाकृत अधिक थी, और कोई आसानी से नौकरी पाने के लिए श्रम बाजार के विस्तार का उपयोग कर सकता था। हालांकि पुरुषों की तुलना में महिलाओं को अभी भी श्रमशक्ति के क्षेत्र में एक गंभीर परेशानी का सामना करना पड़ता था। इस संदर्भ में, मध्ययुगीन काल के अंत में यूरोपीय विवाह प्रारूप का उदय हुआ। ये उत्प्रेरक थे : कैथोलिक चर्च द्वारा पढ़ाये गये मूल्य, संसाधनों की पारिवारिक विरासत के माध्यम से पीढ़ियों के मध्य हस्तांतरण की व्यवस्था, परिवार के बाहर मजदूरी के लिए लोगों के रोजगार के कारण श्रम-बाजारों का निर्माण और ब्लैक डेथ के सामाजिक-आर्थिक प्रभाव।

इन परिस्थितियों में यूरोप में विकसित होने वाली नई विवाह प्रणाली में बच्चों पर उनके माता-पिता की शक्ति और सत्ता और महिलाओं पर पुरुषों की सत्ता में गिरावट आई। श्रम और उत्पादों के लिए उभरती वाणिज्यिक गतिविधियों और बाजारों ने भी इस तथाकथित 'यूरोपीय विवाह प्रारूप' को सुविधाजनक बनाया। परिवार केवल पति-पत्नी और बच्चों के साथ छोटे और एकल परिवार बन गये और यह ज्यादातर मजदूरी पर निर्भर हो गये। साख बाजारों का उपयोग और परेशानी के समय कुछ पैसे बचाने का प्रयास लोगों के जीवित रहने के लिए आवश्यक हो गया। जनसंख्या की प्रकृति और संरचना में परिवर्तन, इसका रोजगार, श्रम का विभाजन और श्रम और साख बाजारों का निर्माण साथ-साथ चला। यह इस युग में अर्थव्यवस्था और समाज के बढ़ते वाणिज्यीकरण का परिणाम था। यह अनुमान लगाया जाता है कि बड़ी संख्या में लोग (आबादी का लगभग एक तिहाई से दो तिहाई) मजदूर बन गये और इस तरीके से आजीविका अर्जित करना जीवन और उसकी परिस्थितियों की एक सामान्य बात बन गई। मध्यकाल के अन्त और प्रारम्भिक आधुनिक यूरोप में बाजारों का असाधारण विस्तार विशेष रूप से उत्तरी सागर के आसपास के क्षेत्र में, इसकी रोशनी में देखा जाना चाहिए। 'यूरोपीय विवाह प्रारूप' के उभरने के अन्य दीर्घकालिक प्रभाव थे। इस नयी विवाह प्रणाली के परिणामस्वरूप पीढ़ियों के बीच आय और संसाधनों का हस्तानांतरण मौलिक रूप से बदल गया। सर्वप्रथम, इससे युवा लोगों को लाभ हुआ क्योंकि उनके माता-पिता ने अब उनमें अधिक निवेश किया था ताकि उनके मूल्य में वृद्धि हो सके, दूसरे शब्दों में, माता-पिता उस निवेश में वृद्धि कर रहे थे, जिसे आजकल हम 'मानव पूँजी' कहते हैं। दूसरा, कुछ हद तक 'यूरोपीय विवाह प्रारूप' ने विवाह की आयु को बढ़ा दिया और इस तरह बच्चों की संख्या सीमित हो गई जो उन दिनों के छोटे जीवन काल में सम्भव हो सकते थे। कम बच्चों के साथ, माता-पिता ने उनकी शिक्षा और प्रशिक्षण के माध्यम से जीवन में उनके अवसरों को बेहतर बनाने के लिए अधिक निवेश किया। औपचारिक स्कूली शिक्षा और नौकरी के दौरान प्रशिक्षण के माध्यम से 'मानव पूँजी' में निवेश एक नया अनुभव था जो अब युवा पुरुषों और महिलाओं के जीवन चक्र में शामिल था, जिससे उनके विवाह के बाजार में प्रवेश में भी

देरी हुई होगी। इस प्रकार पीछे की तरफ दृष्टि रखने की बजाए, अर्थात् वंशावली और बूढ़े आश्रित माता-पिता की देखभाल की बजाए, परिवार इस मायने में प्रगतिशील हो गया कि वह अब बच्चों में अधिक से अधिक निवेश करने लगा। ऐसे परिवारों में वृद्ध लोग, इन नये जनसांख्यिकीय और सामाजिक परिवर्तन के सम्भवतः सबसे महत्वपूर्ण पीड़ित लोग थे। परिवार के वृद्ध सदस्यों की शक्ति और सत्ता कमजोर हो गई थी। वे पुराने प्रकार के व्यवस्थित विवाह प्रणाली में कुछ संसाधन प्राप्त करते थे, लेकिन अब जब विवाह दो सहमत वयस्कों के बीच काफी हद तक एक मुक्त विकल्प बन गया तो उनके पुराने पितृसत्तात्मक विशेषाधिकार का यह स्रोत गायब हो गया। उनके लिए अब अपनी कमाई से बचत सम्भव थी जो अब उच्च मजदूरी के कारण अच्छी थी और इससे उन्हें कुछ सुरक्षा मिल सकती थी। कुछ लोगों को लगता है कि मध्यकाल के अन्त में पश्चिमी यूरोप में 'यूरोपीय विवाह प्रारूप' के उद्भव और पूँजी बाजारों के उद्भव के बीच कुछ सह-सम्बन्ध हो सकता है। अब लोगों ने वृद्धावस्था की सुरक्षा के लिए पैसा बचाना शुरू कर दिया होगा और वे नई उभरती संयुक्त पूँजी कम्पनियों में निवेश कर रहे थे। हालांकि नये विवाह प्रारूप ने एक नया सामाजिक सुरक्षा जोखिम पैदा कर दिया क्योंकि जैसे-जैसे परिवार छोटे होते गये माता-पिता में से किसी एक की समय से पहले मृत्यु होने की सम्भावना अधिक थी। इसलिए साथ-साथ नये सामाजिक प्रबन्ध सामने आए जिन्होंने वृद्धों, बच्चों और दिव्यांगों के लिए कुछ हद तक सामाजिक सुरक्षा प्रदान की। हम कह सकते हैं कि 'उद्यमशील क्रांति' अनेक सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों का परिणाम थी जो मध्य काल के अन्त में फलीभूत हुई। प्रारम्भिक आधुनिक काल में उन परिवारों की अधिमुखता में बदलाव आया जिन्होंने बाजार के सुअवसरों का लाभ उठाया, जिसके परिणामस्वरूप श्रम की आपूर्ति में वृद्धि हुई। जान दी व्रिज मानते हैं कि ये परिवर्तन अठाहरवीं शताब्दी की औद्योगिक क्रान्ति से पहले हुए थे और उनका तर्क है कि उत्तरी समुद्र क्षेत्र में होने वाले आर्थिक परिवर्तनों को समझने के लिए महिलाओं और किशोरों/किशोरियों का श्रम महत्वपूर्ण था। सत्रहवीं शताब्दी का तथाकथित 'डच स्वर्णिम काल' इस आर्थिक परिवर्तन द्वारा निर्मित किया गया था। श्रम बाजारों के माध्यम से महिलाओं और बच्चों के रोजगार में वृद्धि, शिक्षा और प्रशिक्षण में निवेश का उच्च स्तर और श्रम और पूँजी बाजारों का सामान्य विकास स्पष्ट रूप से 'यूरोपीय विवाह प्रारूप' के आने से जुड़ा हुआ था।

12.4 उद्यमशीलता का मूल्यांकन

यहाँ यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि दी व्रिज ने सामाजिक अनुकरण के मॉडल/प्रतिमान को अस्वीकार कर दिया है जो इस परिकल्पना पर आधारित है कि उच्च सामाजिक समूह या वर्ग का उपभोग प्रारूप जो उसकी अभिरुचियों या जरूरतों में परिलक्षित होता है, उसे एक सामाजिक वर्ग द्वारा दूसरे को हस्तांतरित और अनुकरण किया जाता है। इससे यह सवाल उठता है कि सत्रहवीं शताब्दी में ये नई उपयोग इच्छाएँ कैसे अकस्मात उभर कर आई? और कैसे उद्यमशीलता श्रमिकों की अकर्मण्यता या पारम्परिक अवकाश को नष्ट करने में सक्षम थी? चूँकि औद्योगिक क्रान्ति से पहले सामान्य आबादी के बीच नयी अभिरुचियों और नई भोग-विलास की वस्तुओं के किसी बड़े पैमाने पर प्रसार का कोई सबूत नही हैं, दी व्रिज ने अपनी कहानी और विषेष रूप से इसकी विकास की समय-रेखा को अच्छे अनुभवजन्य साक्ष्य पर कम और नैतिक तर्कों, दार्शनिक अटकलबाजी और समकालीन लेखकों की प्रचलित राजनीतिक आर्थिक सोच के इर्द-गिर्द बुना है।

दूसरे शब्दों में, एक वास्तविक 'उद्यमशील-उपभोक्ता क्रांति' की समय-रेखा को प्रदर्शित करने के लिए शायद ही कोई भौतिक प्रमाण हैं, इसलिए वह अनेक प्रकार के साहित्यिक सबूत देना पसंद करते हैं। ये साहित्यिक साक्ष्य, केवल व्ययसाध्यता, उद्यमशीलता और आलस्य के अर्थों में बदलाव दिखाते हैं। उन्हें उपभोग की प्रकृति और तीव्रता में अचानक परिवर्तन के प्रमाण के रूप में नहीं लिया जा सकता है। मध्यकाल के अंत और सोलहवीं शताब्दी के वाणिज्यिक विनिमय और घरेलू अधिकार में वस्तुओं पर कई अध्ययन हैं। वे इंग्लैंड में और तथाकथित 'निम्नतटीय देशों' और आयरलैंड और डेनमार्क में भी शानदार घरेलू उपभोग में उल्लेखनीय वृद्धि के संकेतक हैं। यह उससे पहले हुआ जिसे बाद में 'उपभोक्ता क्रांति' के रूप में वर्णित किया गया था। लेकिन निम्न वर्गों और सामाजिक स्तरों के बीच उपभोक्तावादी व्यवहार के प्रवेश के प्रमाण बहुत कम हैं। यह तर्कसंगत था क्योंकि ऐसे ऐतिहासिक साक्ष्य हैं, जिनसे पता चलता है कि मजदूरी वास्तविक रूप में कम हो रही थी और यह प्रवृत्ति पश्चिमी यूरोप में अधिकांश सत्रहवीं और अठाहरवीं शताब्दी में बनी रही। जान दी व्रिज की 'उद्यमशील क्रांति' हमें एक अलग स्पष्टीकरण प्रदान करती है। उनके विचार में, वास्तविक रूप में मजदूरी गिरावट, निम्न सामाजिक वर्गों के बीच उपभोग के स्तर में वृद्धि के साथ-साथ चली। इन विरोधाभासी रुझानों में सामंजस्य स्थापित करने के लिए, वह इनके साथ बढ़ते हुए उत्पादक सामग्री और श्रम की गहनता का तर्क देते हैं। अन्य विद्वानों ने उनके खिलाफ इस आधार पर तर्क दिया है कि अंग्रेजी ग्रामीण मजदूरों के लिए, तथाकथित 'उद्यमशील क्रांति' का मतलब उपभोग स्तर की वृद्धि के बजाय अधिक आर्थिक कष्ट रहा होगा। यूरोप में सोलहवीं शताब्दी की वाणिज्यिक क्रांति के बाद एक लम्बे समय तक आर्थिक गतिहीनता भी थी। थोड़ा बहुत शोध उपभोग मानकों की जाँच के लिए परीक्षण वस्तुसूचियों पर किए गये हैं। लेकिन वे प्रारम्भिक आधुनिक समाज में निम्न सामाजिक समूहों के जीवन स्तर के बारे में जानकारी प्रदान करने में बहुत उपयोगी नहीं हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि ऐसी वस्तुसूचियाँ अपेक्षाकृत बेहतर सामाजिक समूहों और वर्गों के उपभोग के बारे में अधिक जानकारी प्रदान करती हैं। ये वर्ग साक्षर थे और अपने उपभोग की ऐसी वस्तुसूचियाँ बनाते हैं जबकि निम्न वर्गों में हम शायद ही ऐसी वस्तुसूचियों का अस्तित्व पाते हैं। इसलिए वस्तुसूची के माध्यम से जाँच किये गये उपभोग के स्तर का प्रमाण मध्य सामाजिक समूहों और उच्च वर्गों की ओर झुका हुआ है। इसलिए, वस्तुसूचियों के विद्वानों ने निम्न सामाजिक स्तर के सम्बन्ध में उपभोक्ता व्यवहार में बदलाव के बारे में कोई लम्बा-चौड़ा दावा नहीं किया है। हालांकि कुछ विद्वानों का विश्वास है कि उपभोक्ताओं के व्यवहार में बदलाव अधिक व्यापक था और यह गरीब श्रमिक वर्गों के बीच भी हुआ था। लेकिन यह बिना जोखिम के कहा जा सकता है कि औद्योगिक क्रांति से पहले समाज के निम्न सामाजिक समूहों के बीच उपभोग के विस्तार की बहुत कम पुष्टि हुई है और इसके लिए पुष्टिकारक सबूतों की कमी है।

'उद्यमशील' क्रान्ति और 'उपभोक्ता क्रान्ति' से निकले विचारों ने मजदूरों के लिए एक निश्चित कार्यवर्ष की धारणा पर सवाल उठाया। वे प्रतिवर्ष काम किए गए दिनों की संख्या में वृद्धि की कल्पना करते हैं क्योंकि लोगों ने चाय, चीनी, किताबों और घड़ियों जैसी नयी उपभोक्ता वस्तुओं को खरीदने के लिए अतिरिक्त धन अर्जित किया। यदि इस तरह से कार्यवर्ष में वृद्धि हुई, तो श्रम निवेश जनसंख्या की तुलना में अधिक तेजी से बढ़े, जिससे पूर्व-आधुनिक काल में आर्थिक विकास हुआ। वास्तविक मजदूरी साहित्य में सामान्य दृष्टिकोण के विपरीत, जो मानता है कि कार्यशील वर्ष स्थायी था

और फिर गणना करता है कि नियत मजदूरी और मूल्यों में बदलाव से वार्षिक उपभोग में कितना परिवर्तन आया, 1300-1830 के बीच इंग्लैंड के श्रमिकों के एक अनुभवजन्य अध्ययन में राबर्ट सी. एलन और जैकब एल वेसडॉर्फ (2010) ने यह माना कि श्रमिक समय के साथ अपना उपभोग स्थिर कर लेते हैं और उन्होंने यह गणना की कि वेतन और मूल्यों में परिवर्तन प्राप्त करने के लिए कार्यशील वर्ष को कितना बदलना पड़ेगा। विशेष रूप से, उन्होंने एक विश्लेशात्मक उपकरण का इस्तेमाल किया जिसे उन्होंने 'बुनियादी उपभोग की वस्तुओं की एक टोकरी (Basket)' कहा और ग्रामीण और शहरी दिहाड़ी मजदूरों के कार्यवर्ष की गणना इस कार्य की आवश्यकता के आधार पर की अगर वे इस टोकरी की वस्तुएँ खरीदना चाहते थे। उन्होंने अपने नतीजे की वास्तविक कार्यवर्ष के स्वतन्त्र अनुमानों से तुलना की और पाया कि ग्रामीण श्रमिकों के बीच दो 'उद्यमशील क्रान्तियों' के उदाहरण थे। उनके विश्लेषण में हालांकि दोनों आर्थिक कठिनाइयों के परिणाम थे और किसी भी 'उपभोक्ता क्रान्ति' का कोई संकेत नहीं था। ग्रामीण मजदूरों की तुलना में शहरी मजदूरों के लिए सबूत अलग थे। उनके वास्तविक कार्यवर्ष और बुनियादी वस्तुओं की टोकरी (Basket) को खरीदने के लिए आवश्यक कार्यदिनों की संख्या में चौड़ी खाई थी। इसलिए शहरी क्षेत्रों में एक उपभोक्ता क्रांति के लिए अवसर था। यह अध्ययन दिहाड़ी मजदूरों के दो समूहों के लिए किया गया थाः दक्षिणी इंग्लैंड के खेतिहर और लंदन के भवन निर्माण करने वाले मजदूर। खेत-मजदूरों के लिए बुनियादी वस्तुओं की खरीदने के लिए आवश्यक कार्यवर्ष की वास्तविक कार्यवर्ष के स्वतंत्र अनुमानों के साथ यथोचित रूप से सहमति है। वे जिन बुनियादी वस्तुओं का उपयोग करते हैं, उस उपभोग की टोकरी में कोई नयी वस्तु (चीनी, तम्बाकू, चाय, कॉफी आदि) नहीं थी बल्कि केवल दैनिक उपभोग की वस्तुएँ जो कि प्रारम्भिक आधुनिक इंग्लैंड में आसानी से उपलब्ध थीं, केवल वही मौजूद थीं। इस तथ्य से कि वे काफी हद तक वास्तविक कार्यवर्ष से मेल खाते थे, यह प्रतीत होता है पूर्व औद्योगिक खेतिहर श्रमिकों के बीच उपभोक्ता क्रान्ति नहीं हुई। इसके विपरीत, लंदन के निर्माण श्रमिकों के लिए, उनके वास्तविक कार्यवर्ष और टोकरी को खरीदने के लिए आवश्यक कार्यवर्ष और दिनों के बीच एक बड़ी और चौड़ी खाई यह बताती है कि औद्योगिक क्रान्ति तक पहुँचने में उपभोक्ता क्रान्ति की पूरी गुंजाइश थी जो दोनों अवधारणाओं 'उद्यमशील क्रान्ति' और 'उपभोक्ता क्रान्ति' से मेल खाती हैं। इस अध्ययन में किये गए अनुभवजन्य अभ्यास ने पूर्व-औद्योगिक दिहाड़ी मजदूरों के कार्यों के तरीकों में अन्य अन्तर्दृष्टियाँ प्रदान किया। खेतिहर श्रमिकों के लिए, उन्हें काम की आवश्यकताओं में वृद्धि के दो सोपान मिले : एक 1540 और 1616 के बीच, दूसरा 1750 और 1818 के बीच। श्रम निवेष में शुरुआती उभार इंग्लैंड में 49 पवित्र (Holy) दिनों (Days) को हटाने के साथ-साथ मेल खाता है, जो कि 1536 में लागू किये गये 'प्रोटेस्टेन्ट सुधार' का हिस्सा था। यदि पवित्र दिनों (Holy days) के इस उन्मूलन का उद्देश्य गरीबों को पूरे वर्ष में अधिक दिन काम करने की अनुमति देकर उनके उपभोग को बनाए रखने में मदद करना था, तो इससे श्रमिकों के अधिक सम्पन्न समूहों, जैसे शहरी मजदूरों को भी उच्च वांछित उपभोग के स्तर को प्राप्त करने में मदद मिली होगी जो बदले में विनिर्माण क्षेत्र के लिए एक प्रोत्साहन हो सकता था। अपने अध्ययन में खेत-मजदूरों के बीच अवास्तविक उद्यमशीलता, हालांकि समय के साथ अधिक श्रम की आपूर्ति करने वाले परिवारों के विचार का समर्थन करती है परन्तु उपभोग के लिए नयी और अधिक वस्तुओं का उनकी उपभोग-टोकरी में प्रवेश करने का विचार या उपभोक्ता क्रान्ति का विचार तर्क संगत नहीं लगता। बल्कि खेत श्रमिकों का अतिरिक्त श्रम-निवेश इस तथ्य से उपजा है कि दैनिक

उपभोग की वस्तुएँ आर्थिक रूप से प्राप्त करना और कठिन हो जाता है। खेत मजदूरों के लिए वस्तुओं की एक समान टोकरी प्राप्त करने के लिए 1500 और 1616 के बीच लगभग 160 से 300 से थोड़ा अधिक बढ़कर कार्य दिवसों की आवश्यकता प्रतिवर्ष होती थी।

बोध प्रश्न 1

1) 'उद्यमशील क्रांति' शब्द से आप क्या समझते हैं? प्रारम्भिक आधुनिक यूरोप की अर्थव्यवस्था और समाज पर इसके प्रभाव का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) प्रारम्भिक आधुनिक यूरोप के आर्थिक और सामाजिक जीवन में 'यूरोपीय विवाह प्रणाली' की भूमिका का विश्लेषण कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

12.5 प्रारम्भिक आधुनिक यूरोप में आद्य-औद्योगीकरण

आद्य-औद्योगीकरण एक धारणा थी जिसने उन घरेलू उद्योगों के विकास का संकेत दिया जो दूर के बाजारों के लिए वस्तुओं का उत्पादन करते थे। इस तरह के उद्योगों का विकास यूरोप के कई क्षेत्रों में सोलहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी के बीच देखा गया था। ये तथाकथित आद्य उद्योग ज्यादातर गामीण इलाकों में उभरे थे, जहाँ वे कृषि के साथ-साथ पनपते हैं। उन्होंने किसी उन्नत तकनीकी का इस्तेमाल नहीं किया। इस तरह के उद्योगों में कारखाना-निर्माण के रूप में श्रम शक्ति को भी केन्द्रीयकृत नहीं किया गया था। प्रारम्भिक आधुनिक यूरोप में घरेलू क्षेत्र में, इस व्यापक औद्योगिक विकास ने लम्बे समय से अध्ययन के विषय में रुचियाँ जगाई हैं हालांकि यह एक विवादास्पद विषय भी था। लेकिन 1970 के दशक में इसमें फिर से रुचि जगी और शोधकर्त्ताओं नें 'आद्य-इंडस्ट्री' पर ध्यान केन्द्रित किया। यह सामंतवाद से पूँजीवाद में संक्रमण और कारखानों के रूप में औद्योगीकरण का एक स्पष्टीकरण बन गया।

परिभाषिक पद 'आद्य-औद्योगीकरण' का इस्तेमाल फैंकलिन मेंडेल्स पहली बार 1969 में फ्लेमिश (उत्तर और पश्चिमी बेल्जियम के) लिनन (कपड़ा) उद्योग पर शोध में करते हैं। फ्रेंकलिन मेंडेल्स ने इस शोध पर एक प्रसिद्ध लेख 1981 में प्रकाशित किया। फ्रेंकलिन मेंडेल्स ने तर्क दिया कि आद्य-उद्योग ने जनसंख्या में इस जनसांख्यिकीय परिवर्तन का आगे विस्तार किया जिसके कारण आद्य-उद्योगों का और विस्तार हुआ

और जिससे एक प्रकार का स्व-पोषित विकास हुआ। मेंडेल्स ने तर्क दिया कि घरेलू उद्योग में इस स्व-पोषित वृद्धि ने कारखाना उत्पादन के लिए आवश्यक आर्थिक बदलावों जैसे कृषि के वाणिज्यीकरण, पूंजी के संचय, उद्यमशीलता के विकास, विदेशी बाजारों पर नियंत्रण और एक औद्योगिक श्रम शक्ति के निर्माण के लिए आवश्यक कई परिवर्तन किए। मेंडेल्स ने दावा किया कि आद्य-औद्योगीकरण, औद्योगीकरण की शुरुआत थी। अठारहवीं शताब्दी में, सभी पूर्व-आधुनिक कृषि समाजों की तरह, कृषि संचालन मौसमी था और इस तरह की कृषि ने यूरोप में ग्रामीणों के लिए एक मौसमी बेरोजगारी पैदा की। लेकिन जो नया था वह यह था कि अब अनेक ग्रामीण लोगों ने घरेलू शिल्प के माध्यम से उत्पादन करना शुरू कर दिया और उन्होंने अपनी उत्पादित वस्तुओं को अपने नजदीकी बाजारों और क्षेत्रों से दूर के बाजारों में निर्यात करना शुरू कर दिया। इस परिवर्तन के परिणामस्वरूप पारम्परिक शहरी संस्थाएँ जैसे श्रेणियाँ (guilds) जिन्होंने पहले औद्योगिक विकास को सीमित किया हुआ था, अब उन्होंने अपनी प्रासंगिकता खोना शुरू कर दिया और वे गायब होने लगीं। इस प्रक्रिया ने एक साथ ग्रामीण संस्थाओं जैसे कि उत्तराधिकार प्रणाली, सामुदायिक संस्थाओं जैसे कम्यून और जागीर प्रणाली (Manorial System) को कमजोर कर दिया। पारम्परिक समाज में, जनसंख्या वृद्धि और आर्थिक संसाधनों में एक अलग तरह का संतुलन और समायोजन था। अब वह संतुलन बाधित हो गया। 1974 में डेविड लेविन ने भी आद्य-इंडस्ट्री के विकास में जनसंख्या के रूप में जनसांख्यिकीय परिवर्तन की भूमिका पर जोर दिया। उन्होंने औद्योगिक पूंजीवाद के लिए मजदूरी पर निर्भर 'सर्वहारा' के निर्माण के लिए इन विकासों की भूमिका के लिए तर्क दिया। 1976 में जॉयल मोकिर ने इन अधिकांश तर्कों को खारिज करते हुए दावा किया कि पारम्परिक क्षेत्र में आद्य-उद्योगों ने आधुनिक क्षेत्र के लिए सस्ते अधिशेष श्रम के एक समूह का निर्माण किया। अंत में, 1977 में, तीन जर्मन इतिहासकारों, पीटर क्रायरे, हांस मेडिक और जुर्गन श्लूमबोहम ने औद्योगीकरण से ध्यान हटाकर यह तर्क दिया कि आद्य-उद्योगों ने विकास के लिए पारम्परिक यूरोपीय समाज में पूंजीवादी और आधुनिक उद्योग के विकास में जनसांख्यिकीय, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाओं को तोड़ दिया। प्रारम्भ में मेंडेल्स के अठाहरवीं शताब्दी के फ्लैन्डर्स के अध्ययन और उन्नीसवीं सदी के लीसेस्टरशायर के लेविन के केवल दो प्रमुख अनुभवजन्य अध्ययन इस विषय पर थे।

डियोन और मेंडेल्स ने आद्य-औद्योगीकरण के चार मुख्य प्रभावों को सूचीबद्ध किया। सबसे पहले, आद्य-उद्योगों ने जनसंख्या वृद्धि को प्रोत्साहन दिया और ग्रामीण आबादी पर कम्यून, जमींदारों और विरासत प्रणालियों के पारम्परिक नियन्त्रण को कम करने के परिणामस्वरूप इसकी परिणति भूमि विखंडन के रूप में हुई। दूसरा, आद्य-औद्योगिक उत्पादन से अर्जित मुनाफे से कारखाना औद्योगीकरण के लिए पूँजी के संचय में भी मदद मिली। तीसरा, 'आद्य-उद्योगों' ने व्यापारियों और श्रमिकों को उद्यमशीलता कौशल में प्रशिक्षित किया जो कारखाना औद्योगीकरण के लिए आवश्यक था। अंत में आद्य-औद्योगीकरण कृषि के लिए भी एक उत्प्रेरक था और इसने वाणिज्यीकरण को प्रोत्साहित किया। कृषि वस्तुओं के लिए एक विशाल बाजार के बिना, स्थाई आधार पर शहरीकरण और औद्योगीकरण को बनाए रखना असंभव रहा होता। इस तरह से आद्य-उद्योग ने कारखाना उद्योग का मार्ग प्रशस्त किया। यद्यपि लेखकों ने कभी-कभी इसके उद्योगों के विनाश के विपरीत प्रभाव भी स्वीकार किए (मेंडेल्स, 1982)।

12.6 आद्य-औद्योगीकरण के सिद्धान्तों की आलोचना

विद्वानों द्वारा आद्य-औद्योगीकरण के सिद्धान्तों की कई आधारों पर आलोचना की गई है। इस सिद्धान्त के साथ पहली समस्या यह है कि इसमें एक उत्पादन इकाई सटीक क्षेत्रीय आकार और प्रकृति के रूप में ठीक से परिभाषित नहीं है। आद्य-उद्योग अपने क्षेत्रीय विस्तार में भिन्न हो सकते हैं और अक्सर एक बाजार शहर के आर्थिक क्षेत्र से परे चले जाते हैं या दूसरी ओर उनमें एक विशिष्ट क्षेत्र में स्थित केवल एक या दो समुदाय के लोगों की सीमित संख्या के द्वारा उत्पादन शामिल था। इस अर्थ में, हम एक विशेष क्षेत्र के आद्य उद्योग को एक भौगोलिक क्षेत्र के रूप में परिभाषित कर सकते हैं जहाँ लोग दूर के बाजारों में विक्रय के लिए वस्तुओं के उत्पादन में लगे हुए थे लेकिन यह विश्लेषणात्मक कठोरता के बिना बहुत अस्पष्ट परिभाषा प्रतीत होती है। दूसरा, विद्वानों में किसी विशेष क्षेत्र के श्रम के रोजगार के प्रतिशत के मुद्दे पर आम सहमति नहीं है जिसे गैर कृषि क्षेत्र में नियोजित किया जाना चाहिए ताकि इसे आद्य-औद्योगिक क्षेत्र के रूप में परिभाषित किया जा सके। औद्योगिक उत्पादन में तीव्रता और श्रम रोजगार की मात्रा में परिवर्तन के बारे में भी स्पष्ट नहीं है कि आद्य-औद्योगीकरण के उदाहरण के रूप में इसे योग्य बनाने के लिए, उस विशेष आर्थिक गतिविधि में ऐसे श्रम बल को कितना चिरस्थायी होना चाहिए। आद्य-औद्योगीकरण के लिए निर्यात बाजारों का निहितार्थ भी समस्यामूलक है। क्या स्थायी निर्यात बाजारों के स्थायित्व के बिना 'आद्य-औद्योगीकरण' स्वयं को बनाए रख सकता है? या क्या निर्यात बाजार आद्य-उद्योगों के विकास के लिए नितांत आवश्यक हैं या कुल औद्योगिक उत्पादन के किस अंश को 'आद्य-उद्योग' के रूप में नामित करने के लिए निर्यात करने की आवश्यकता है? फिर निर्यात बाजारों और 'आद्य-औद्योगिक' क्षेत्र से उनकी दूरी को स्थानीय के बजाए बड़ा क्षेत्रीय या निर्यात बाजार के रूप में चिह्नित करने के लिए क्या लक्षण होना चाहिए? ये सवाल अनुत्तरित रहे। स्थानीय शिल्प और निर्यात उन्मुख आद्य-उद्योगों के बीच विभेदीकरण भी सिद्धांत के समर्थकों के बीच विवादास्पद बना रहा। ऐसी श्रेणियों में विश्लेषणात्मक कठोरता को नजरअंदाज किया जाना स्पष्ट था। 'आद्य-औद्योगीकरण' के सिद्धान्त ने अन्य प्रकार के औद्योगिक उत्पादन की भी अनदेखी की। पूर्व-औद्योगिक विनिर्माण केवल कुटीर उद्योग पर आधारित नहीं था। शिल्प उत्पादन पर आधारित 'आद्य-उद्योग' में इस्तेमाल की जाने वाली तकनीक आदिम किस्म की नहीं थी। अधिक तकनीकी रूप से उन्नत शिल्प पर आधारित केन्द्रीयकृत कारखाना जो कुशल श्रमिकों को नियोजित करते हैं और शहरी केन्द्रों और निर्यात के लिए उत्पादन पर आधारित थे, पूर्व-औद्योगिक प्रारम्भिक आधुनिक काल में भी अस्तित्व में थे। कुछ इतिहासकारों ने तर्क दिया है कि पूर्व औद्योगिक विनिर्माण विविध रूपों में मौजूद थे और औद्योगिक क्रांति की शुरुआत से पहले अर्थव्यवस्था पर औद्योगिक उत्पादन के प्रभाव का विश्लेषण करने के लिए सभी प्रकार के औद्योगिक उत्पादन पर विचार किया जाना चाहिए। दूसरों ने तर्क दिया कि शहरों में आधारित बड़े निर्यात उद्योग जो कारीगरों को अग्रिम धनराशि या कच्चा माल आदि देकर उत्पादन करवाते थे, उनको और अधिक परिष्कृत केन्द्रीयकृत औद्योगिक इकाइयों को भी औद्योगिक उत्पादन की मात्रा में जोड़ा जाना चाहिए। विभिन्न प्रकार के पूर्व-औद्योगिक विनिर्माणों को बनाए रखने में तकनीकी कारकों और भौतिक भूगोल की भूमिका की अनदेखी एक अन्य प्रमुख आलोचना का आधार थी। मेंडेल्स ने एक विशिष्ट उत्पादन करने के लिए आवश्यक न्यूनतम् उत्पादन सामग्री (जिसे समकालीन अर्थशास्त्री 'उत्पादन फलन्' कहते हैं) और

परिवहन लागत के महत्व को बताने के लिए एक क्षणिक संदर्भ दिया लेकिन विस्तार से इन कारकों की भूमि का एक अज्ञात क्षेत्र बना रहा। संक्षेप में, आलोचकों ने तकनीकी, भौगोलिक और संस्थागत कारकों की भूमिका को कम करके आँकने की ओर संकेत दिया।

इन सिद्धान्तों में 'पारम्परिक समाजों' के बारे में पूर्वाग्रहपूर्ण दृष्टिकोण था जिनमें आद्य-उद्योग के विकास ने परिवर्तन शुरू किये थे, और इन पूर्व धारणाओं को चुनौती दी गई थी। 'आद्य-औद्योगीकरण की परिकल्पना अलेक्जेंडर छायानोव के विचारों से बिना आलोचना के उधार ली गई थी। छायानोव ने किसानों को विवेकरहित मनुष्यों के रूप में माना जो लागत और मुनाफे की गणना करने में सक्षम नहीं थे। बाजारों में उनका धन का उपयोग या लेन-देन तर्कसंगत दृष्टिकोण पर आधारित नहीं था (छायानोव, 1966)। लेकिन प्रारम्भिक आधुनिक काल के किसान और अन्य गैर-कृषि उत्पादकों की यह अनुभूति किसी भी तरह के सत्य-साधनीय अनुभवजन्य अध्ययन पर आधारित नहीं थी। ग्रामीण उत्पादकों और उपभोक्ताओं का निर्वाह के प्रति उन्मुखीकरण को वैसे ही स्वीकार कर लिया था। किसान और यहाँ तक कि आद्य-औद्योगिक श्रमिक एक साथ कई भूमिकाओं जैसे व्यापारियों, बिचौलियों, अग्रिम राशि देकर अन्य शिल्पियों द्वारा उत्पादन करवाने और कभी-कभी विनिर्माताओं के रूप में कार्यरत थे। पूर्व आधुनिक उत्पादकों के आर्थिक निर्णय और उत्पादक विकल्प जनसांख्यिकीय और आर्थिक कारकों के कारण बदल रहे थे। उनके दृष्टिकोण और अनुभूतियाँ बदल सकती थी और उन पर अपरिवर्तनीय 'पारम्परिक मानसिकता' का वर्चस्व नहीं था। उनके आसपास के सामाजिक परिवर्तनों ने उन्हें आर्थिक गणना के संदर्भ में सोचने के लिए मजबूर किया उनके निर्णय तर्कसंगत आर्थिक विकल्पों द्वारा निर्देशित और शासित होने लगे और उन्होंने बाजार की शक्तियों के प्रभाव को महसूस किया। सिद्धांतों की जनसांख्यिकीय भविष्यवाणियाँ भी मिथ्या पाई गई, जैसे-जैसे इस विषय पर अधिकाधिक अनुभवजन्य अध्ययन आने शुरू हुए। इसी तरह 'आद्य-उद्योग' का प्रभाव भी एकसमान नहीं था और यह वर्ग, लिंग, क्षेत्र तथा अन्य जनसांख्यिकीय कारकों के अनुसार भिन्न था। इसका प्रभाव यूरोपीय समाजों में जनसांख्यिकीय चर राशियों जैसे विवाह, प्रजनन, मृत्यु दर और प्रवासन पर काफी भिन्न-भिन्न था। यह अभिधारणा दी गई थी कि उन सभी क्षेत्रों ने जिन्होंने 'आद्य-उद्योगों' के विकास का अनुभव किया, वहाँ निरपेक्ष संख्या और प्रति इकाई घनत्व के रूप में जनसंख्या में वृद्धि का भी अनुभव किया और वे विवाह योग्य आयु के कम होने और प्रजनन दर में वृद्धि आदि को भी प्रदर्शित करते हैं। हालांकि, वास्तविक अनुभवजन्य अनुभवों ने विविधताओं की एक विस्तृत श्रृंखला का प्रदर्शन किया। इसके अलावा, इन जनसांख्यिकीय परिवर्तनों और 'आद्य उद्योग' की वृद्धि के बीच कोई सीधा सम्बन्ध नहीं था। कृषि के वाणिज्यीकरण और 'आद्य-उद्योग' के बीच का सम्बन्ध भी अनिश्चित था। 'आद्य-उद्योगों' के क्षेत्रों में कृषि सम्बन्धों में भी कोई समरूपता नहीं थी। ये क्षेत्र निर्वाह के लिए खेती से लेकर बाजार केन्द्रित वाणिज्यिक खेती तक भिन्न-भिन्न थे और क्षेत्रों का एक बड़ा हिस्सा अभी भी सामन्ती वर्चस्व के तहत था और उसका संचालन कृषि दासों के श्रम द्वारा होता था। आद्य-उद्योगों के कारीगर कई मामलों में कृषि पर भी आंशिक रूप से निर्भर थे। वे शहरी श्रमिकों की तरह केवल कृषि उपज के उपभोक्ता नहीं थे। क्षेत्रों के बीच पारम्परिक कृषि संस्थाओं के जीवित रहने और ग्रामीण सामाजिक संरचना में भी अन्तर थे। कुछ में वे बिखरने लगे थे लेकिन दूसरे क्षेत्रों में वे लम्बे समय तक अप्रभावित अस्तित्व में रहे। इसलिए सामाजिक, राजनैतिक

संरचनाओं की भूमिका को भी सकारात्मक रूप से संशोधित किया गया है। अब पारम्परिक सामाजिक संरचना के स्थायित्व और निरंतरता और धीरे-धीरे बाजारों के प्रवेश को स्वीकृति मिली है। विद्वान अब श्रेणियों और उनके विशेषाधिकारों से सम्बन्धित संरचनाओं, ग्राम समुदायों और जागीरों की संस्थाओं के लम्बे समय तक बने रहने में विश्वास करते हैं। एक अन्तिम प्रमुख आलोचना ने कारखाने के उत्पादन और औद्योगकीकरण का मार्ग प्रशस्त करने में या औद्योगिक क्रांति के अग्रगामी के रूप में कार्य करने में आद्य उद्योग की भूमिका पर सवाल उठाया है।

12.7 प्रारम्भिक आधुनिक यूरोप में पुस्तक उत्पादन, साक्षरता और मानव पूँजी निर्माण

मध्यकालीन युग के अन्तिम चरण में उत्तरी सागर क्षेत्र में पहले से ही मानव पूँजी में निवेश के लिए शिल्पकारों के कला कौशल और समग्र साक्षरता (और शायद सामान्य शिक्षा) दोनों में उत्साहजनक स्थितियाँ थीं। उसी समय, पंद्रहवीं शताब्दी के दौरान, जिस तरह से ज्ञान का पुनरुत्पादन किया गया था, उसमें पुस्तकों की कीमतों में बहुत तेज गिरावट आई, जिसके फलस्वरूप 'शैक्षिक' ज्ञान की पुस्तकों के उत्पादन और पुनरुत्पादन के लिए सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली। 1455 के बाद के दशकों और शताब्दियों में पुस्तक उत्पादन में भारी वृद्धि हुई। तब पहले से ही सूचना प्रसार की एक नई प्रणाली अस्तित्व में थी। प्रारम्भिक आधुनिक काल की शुरुआत को परिभाषित करने वाली दो प्रमुख घटनाएँ विचारों से जुड़ी हुई थीं। पहला तकनीकी था : पहला टाइप के द्वारा मुद्रण का विकास। सदियों से विचार पांडुलिपियों में प्रसारित हो रहे थे, लेकिन मुद्रण के यन्त्र ने बहुत बड़ी संख्या में ग्रन्थों की प्रतिलिपि तैयार करने का एक अतिरिक्त साधन प्रस्तुत किया। सस्ते और महँगे दोनों संस्करणों में पुस्तकों का उत्पादन किया गया। सस्ते संस्करणों का उत्पादन, उन लोगों की बढ़ती संख्या के साथ मिलकर जो पढ़ने और लिखने में सक्षम थे, इसका मतलब था कि समाज के सभी वर्गों के लोग पढ़ रहे थे – अमीर, मध्यम वर्ग और यहाँ तक कि कुछ श्रमिक जनों की भी पुस्तकों और विचारों तक पहुँच थी। मुद्रण ने जीवन के लिए, सस्ती पुस्तकों की उपलब्धता का धर्म और संस्कृति पर बड़ा प्रभाव डाला होगा। प्रोटेस्टेंट विचारों के प्रभाव के लिए पुस्तकें और पर्चे महत्वपूर्ण थे। पढ़ना और लिखना यूरोपीय मध्ययुग और एशियाई साम्राज्यों में मौजूद था, लेकिन यह मोटे तौर पर पादरी और मध्ययुगीन मुंशियों तक ही सीमित था, जिन्होंने अथक नकल की और फिर से नकल की। साक्षरता एक विशिष्ट विशेषाधिकार बनी रही और 1500 सी. ई. तक, सबसे अधिक सम्भावना नहीं थी कि दुनिया की जनसंख्या के 10 प्रतिशत से अधिक लोग पढ़ या लिख सकते थे। फिर क्या बदला? प्रारम्भिक आधुनिक पश्चिम में, निश्चित रूप से गुटेनबर्ग के मुद्रण यंत्र और चलनशील टाइप का आगमन हुआ। गुटेनबर्ग के मुद्रण यंत्र के आविष्कार होने तक पाठ को पुनः पेश करने का एकमात्र तरीका हाथ से नकल करना था, जो एक दुश्कर कार्य था। मुद्रण यन्त्र ने पुस्तकों को एक व्यापक वस्तु बना दिया, और ठीक उसी कारण से, साक्षरता एक व्यापक घटना बन गई। 'पुस्तक' के सामाजिक इतिहास की रूपरेखा रोजर चार्टियर ने प्रस्तुत की है। मानकीकृत टाइप आकृति ने पढ़ने को आसान बना दिया, क्योंकि पाठकों को अब किसी अन्य व्यक्ति की लिखावट की विलक्षणता से नहीं जूझना पड़ता था। लिपिकीय नकल करने वालों द्वारा अक्सर की जाने वाली त्रुटियों को समाप्त कर दिया गया और इस प्रकार हजारों लोगों को एक मूलग्रंथ के एक समान, संभवतः त्रुटिमुक्त ''मानक

संस्करण'' तक पहुँच प्राप्त हो सकती थी। इसने लिखित शब्द के उत्पादन, प्रसारण और अभिग्रहण के नये तरीके पेश किए। हालांकि पूर्व-औद्योगिक समाजों और प्रारम्भिक आधुनिक यूरोप में साक्षरता के प्रसार पर संदेह नहीं किया जा सकता है। साक्षरता का भूगोल उत्तर और उत्तर-पश्चिम यूरोप में उच्च साक्षरता का संकेत देता है, हालांकि इसमें लिंग, व्यवसाय और सम्पदा के आधार पर असमानताएँ थी। साक्षरता मुख्य रूप से एक व्यक्ति के कार्य और सामाजिक स्थिति से जुड़ी हुई थी।

अंत में इसी क्षेत्र में साक्षरता में उल्लेखनीय वृद्धि से सामान्य श्रमिकों तथा मानसिक श्रम और बौद्धिक गतिविधियों में लगे लोगों के बीच की खाई को पाट दिया गया, यह प्रक्रिया संभवतः तटीय देशों (और उत्तरी फ्रांस और शायद जर्मनी और इटली के कुछ हिस्सों में) ब्लैक डैथ की घटना के बाद डेढ़ शताब्दी के दौरान शुरू हुई और सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी तक इंग्लैंड में फैल गई। इस काल के अंत में, उत्तरी सागर क्षेत्र में लगभग सभी कुशल कारीगर संभवतः साक्षर थे, वे निश्चित रूप से तटीय देशों में पढ़ने और लिखने में सक्षम थे और ग्रेट ब्रिटेन, जर्मनी और फ्रांस में यह प्रक्रिया तेजी से बढ़ रही थी, कुशल प्रशिक्षण संस्थानों ने मानव पूँजी निर्माण के अपेक्षाकृत उच्च स्तर का उत्पादन किया। गिरती हुई पुस्तकों की कीमतों और साक्षरता में साथ-साथ वृद्धि हुई। मुद्रण में क्रांति के कई अन्य सामाजिक आर्थिक परिणाम थे। समाज और अर्थव्यवस्था में कई नई भूमिकाएँ सामने आई : 1) बुद्धिजीवी, जो अपनी कलम से जीते थे, यानि अपनी पुस्तकों की आय से (इरास्मस इसका शायद पहला उदाहरण था) और 2) प्रकाशक/मुद्रक, जिन्होंने अक्सर नई पुस्तक को शुरू करने और नई परियोजनाओं के विकास में और शिक्षाविदों को एक साथ लाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अखबार और पत्रिका का आविष्कार बाद में हुआ।

बोध प्रश्न 2

1) क्या आद्य-औद्योगीकरण औद्योगिक क्रांति का अग्रदूत था? इस पर अपनी स्थिति स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) पुस्तक-उत्पादन की प्रकृति पर संक्षेप में चर्चा कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

12.8 सारांश

इस इकाई में, हमने मूल रूप से यह प्रदर्शित किया है कि आधुनिक कारखानों प्रणाली के रूप में औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि के कारण बनने वाले आधार स्तम्भों में परिवर्तन कैसे धीमी गति से प्रारम्भिक आधुनिक यूरोप में आमतौर पर तटीय देशों में हो रहे थे। उपभोग और उत्पादन के प्रारूपों को क्रमशः कुछ विद्वानों द्वारा 'उद्यमशील क्रांति' और 'आद्य-औद्योगीकरण'' के रूप में अवधारणाबद्ध किया गया है। ये इतिहास में वैचारिक रूप से विवादस्पद विषय हैं। इस विषय में बड़े शैक्षणिक निवेश के बावजूद अनुभवजन्य प्रमाण भी निर्णायक नहीं हैं। लेकिन एक बात निश्चित है कि शेष विश्व अर्थव्यवस्था की तुलना में उत्तरी सागर से सटे देशों के समाज और अर्थव्यवस्था में कुछ विभिन्नता दिखाई दे रही थी। उपभोग और उत्पादन के बदलते प्रारूप और संस्थाओं का विकास इसकी भिन्नता के संकेतक हैं।

12.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) भाग 12.2 तथा भाग 12.4 देखें।

2) भाग 12.3 देखें।

बोध प्रश्न 2

1) भाग 12.5 तथा भाग 12.6 के आधार पर उत्तर दें।

2) भाग 12.7 देखें।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY